ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-3* Issue-2*March- 2018
Innovation The Research Concept

अलवर जिले की आधारभूत औद्योगिक संस्थाओं की प्रासंगिकता : एक भौगोलिक अध्ययन

सारांश

औद्योगिक विकास को आर्थिक विकास के स्तर को नापने के लिए मापदंण्ड के रूप में उपयोग किया जाता है। संसार के सभी विकसित देशों में औद्योगिक क्षेत्र अत्यंत विकसित और विविधीकृत होता है। भारत में औद्योगिक विकास के लिए सभी आवश्यक दशाएँ विद्यमान है।

मुख्य शब्द : सतत् विकास, उपभोक्ता, प्रासंगिकता, आयाम।

सतीश कुमार दायमा
शोधार्थी,
भूगोल विभाग,
राजस्थान विश्वविद्यालय,
जयपुर, राजस्थान

सपना यादव
शोधार्थी,
भूगोल विभाग,
गर्वमेन्ट गर्ल्स कॉलेज,
गुरूग्राम, सेक्टर–14

प्रस्तावना

स्वतन्त्रता के समय भारत का औद्योगिक विकास मुख्य रूप से उपभोक्ता वस्तुओं तक सीमित था। प्रथम पंचवर्षीय योजना से वर्तमान पंचवर्षीय योजना तक औधागिक विकास को समायोजित किया गया हे। आज "सिंहद्वार" कहे जाने वाले अलवर (राज.) की औद्योगिक प्रासंगिक अपने सतत विकास पर है अलवर का एन.सी.सी.आर क्षेत्र में होना है। भीवाड़ी रीको, राजसीको, खुशखेड़ा, टपूकड़ा, मेधा फैक्ट्री आदि इस औद्योगिक प्रासंगिकता के अहम आयाम है। अलवर जिले मे स्थित औद्योगिक क्षेत्र में न केवल कुटीर व लघु उधोग, राष्ट्रीय उधोग, अपीतु– इन उद्योगो के फलस्वरूप यहाँ पर आधारभूत सुविधाओं में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है।

अध्ययन क्षेत्र

अलवर जिला राजस्थान का सिंह द्वार के नाम से जाना–पहचाना जाता है। राजस्थान की राजधानी जयपुर व भारत की राजधानी दिल्ली के मध्य राष्ट्रीय राजमार्ग 8 पर अरावली पर्वतमाला की गोद में बसा है। राजस्थान प्रांत के उत्तर–पूर्व में स्थित अलवर जिला 27°4′ से 28°4′ उत्तरी अक्षांश और 76°7′ से 77°13′ पूर्वी देशान्तर तक फैला हुआ है। अलवर जिले में स्थित अलवर औद्योगिक क्षेत्र एवं भिवाड़ी औद्योगिक क्षेत्र ने केवल राजस्थान अपितु भारत के भी– प्रमुख औद्योगिक क्षेत्रों में से एक हैं। नये उद्योगो की स्थापना से आयात–निर्यात प्रभावित हेाता है। जो देशों के आर्थिक विकास का सूचक है। आज अलवर जिले में उद्योगों की स्थापना से रोजगार के नये अवसर उपलब्ध हो रहे है। निर्मित वस्तुओं से देश की विदेशी मुद्रा में वृद्धि होती जा रही हैं अतः स्पष्ट है कि जिले में औद्योगिक विकास लगातार प्रगति कर रहा है लोगो के जीवन स्तर में वृद्धि हो रही है।

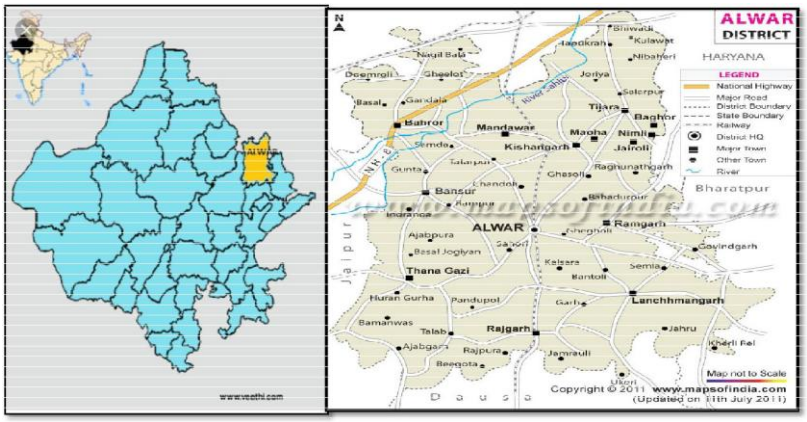

जिले की आधारभूत संस्थाएँ

रीको–राजस्थान राज्य औद्योगिक विकास एवं नियोजित नगिम लिमिटेड की स्थापना 28 मार्च 1969 को राजस्थान उद्योग एवं खनिज– विकास के खनिज विकास सम्बन्धी कार्यो को नवगठित निगम राजस्थान राज्य खनिज विकास निगम को सौंप दिया गया तथा जनवरी 1980 में राजस्थान राज्य उद्योग व खनिज विकास निगम के नाम रीको कर दिया गया हैं। रीको प्रशासन राजस्थान में 28 क्षेत्रीय कार्यालय की स्थापना की है वर्तमान में इसकी शेयर पूँजी 2350 लाख रूपयें है व चुकता पूँजी 2102 मिलियन है आर आई आई सी ओ ने राजस्थान के औद्योगिकरण की स्थापना की है। औद्योगिक क्षेत्रों में आर आई आई सी ओ की भी ऋण प्रदान करके एक वित्तीय संस्थान के रूप में कार्य करता है जो कि बड़े, माध्यम, व लघु परियोजनाए है। हाल ही में रीको ने 90 अरब के आस–पास निवेश किया है जो कि 1.09 लाख व्यक्तियों को रोजगार उपलब्ध करवाता है और 37,000 औद्योगिक इकाईयाँ इन औद्योगिक क्षेत्रों के उत्पादन में काम कर रही है। वर्ष 2011–12, 2012–13 और 2013–14 में आर० आई० आई० सी० ओ० का शुद्ध लाभ– 4734 मिलियन रूपये है। रीको का प्रमुख उद्देश्य राज्य में तीव्र गति औद्योगिक विकास करने हेतु मध्यम एवं बड़े पैमाने के उद्योग की दीर्घकालीन वित तथा लघु, मध्यम एवं वृहद श्रेणी के उद्योग स्थपित करने हेतु आधारभूत सुविधाएँ प्रदत्त की जाती है व औद्योगिक व्यापार एवं विनियोग संवर्दन गतिविधयाँ की जाती है।

भिवाड़ी औद्योगिक क्षेत्र

रीको द्वारा विकसित भिवाड़ी औद्योगिक क्षेत्र की शुरूआत 1976 में हुई जो राजस्थान के बिल्कुल उत्तरी–पूर्वी किनारे पर–न केवल भारत में बल्कि विश्व में भी अपनी पहचान बना चुका है। सन् 1976 में इसकी शुरूआत 130 एकड़ भूमि के साथ हुई थी जो वर्तमान में 5300 एकड़ तक पहुँच गई है। इस क्षेत्र की माँग के अनुसार रीको ने 1200 एकड़ भूमि का और अधिग्रहण किया है तथा आने वाले समय में 2000 एकड़ पहुँच जायेगी।

यह दिल्ली राष्ट्रीय राजमार्ग के पास स्थित है। यह दिल्ली के सबसे पास का बिन्दु है तथा दिल्ली के उद्यमियों के लिए एक अनुकूल औद्योगिक क्षेत्र है। इस औद्योगिक क्षेत्र के पाँच फेज है तथ इसके पास टपूकड़ा, चौपानीकी, शेरखुर्द, पथरेडी, आदि औद्योगिक क्षेत्र स्थित है। दिल्ली जैसा बडा बाजार बहुत नजदीक स्थित है। अच्छी आधारभूत सुविधाएँ जो रीको द्वारा विकसित की गई है। गुड़गाँव, व दिल्ली, मानेसर की तुलना में सस्ती भूमि है। बिना किसी समस्या के सस्ता श्रम उपलब्ध है। बहुराष्ट्रीय कंपनी–जिलेर, रेनन, बॉच, लॉम्ब आदि भी स्थापित है। 2010 में सेल कार एवं ओरियंट ड्राफ्ट लिमिटेड (भारत की सबसे बड़ी रेडीमेड गारमेन्ट निर्यातक कम्पनी) को भी इस औद्योगिक क्षेत्र में भूमि आवंटित की गई है। यहाँ पर 80,000 से अधिक व्यक्तियों को प्रत्यक्ष रोजगार 90,000 हजार से अधिक निर्यात हुआ है। हाल ही में आई.सी.डी. भिवाड़ी में 2015–2016 में 280.06 करोड़ का निर्यात हुआ है। वर्तमान में रीको द्वारा विकसित 15 औद्योगिक क्षेत्र है एम. आई. ए. अलवर, खेरली, राजगढ़, खैरथल, भिवाड़ी, रामपुरा, मुण्डाना। शाँहजहापुर, बहरोड, नीमराणा, खुसखेड़ा, चौपानीका, थानागाजी, शेरखुर्द है।

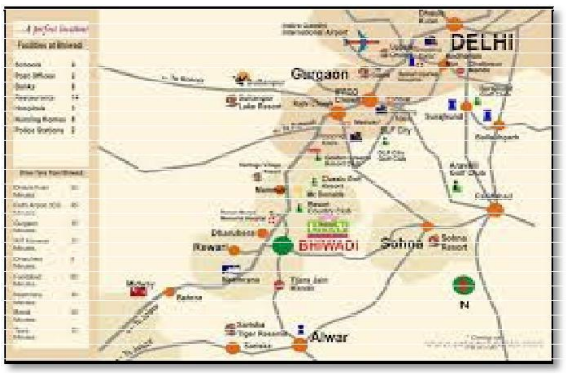

मत्स्य औद्योगिक क्षेत्र

मत्स्य औद्योगिक क्षेत्र में निगम द्वारा मत्स्य प्रबल औद्योगिक गतिविधिओं को देखते हुऐ मत्स्य औद्योगिक क्षेत्र से लगते हुऐ मत्स्य औद्योगिक क्षेत्र हेतु 201.15 एकड़ भूमि आवंटित है। इस क्षेत्र में विभिन्न नाप के 204 भूखण्ड नियोजित किये गये है तथा यहाँ पर 44 भूखण्ड पर 34 इकाईयाँ के द्वारा उत्पादन शुरू किया गया है। इस औद्योगिक क्षेत्र के विकास के लिए निगम द्वारा 1488. 91 लाख रू की प्रशासनिक स्वीकृत जारी की गई है।

एग्रो फूड पार्क

इसका विकास निगम द्वारा वर्ष 2006–2007 में किया गया है इस औद्योगिक क्षेत्र के लिए कुल 185.94 एकड भूमि आवास की गई है। एग्रो फूड पार्क में 203 भूखण्ड नियोजित है। इन भूखण्ड नियोजित है। इन भू–खण्ड क्षेत्र के लिए निगम द्वारा रूपये 1917.65 लाख की प्रशासनिक स्वीकृति जारी की है।

लघु एंव कुटीर उद्योग

अलवर जिले में 31 मार्च 2010 से 2015 तक लघु एवं कुटीर उद्योग की संख्या इनसे प्राप्त रोजगार व निवेश का ब्यौरा निम्नानुसार है।

वर्ष	इकाईयों की संख्या	रोजगार	निवेश (लाख रूपये)
2010–11	16612	54288	37289.07
2011–12	16918	55979	40558.54
2012–13	18472	58915	44021.78
2013–14	19323	61619	4599.8.22
2014–15	22325	65601	50619.16
2015–16	24527	7561	57.202.05

नीमराणा औद्योगिक क्षेत्र

वर्तमान में यह क्षेत्र जापानी उद्योगो छण्भ्ण् 8 स्थित है राजस्थान सरकार राजसथान औद्योगिक विनियोजन निगम (रीको) के माध्यम से अलवर जिले के नीमराणा में पिछले कुछ वर्षो से विभिन्न चरणो में औद्योगिक क्षेत्रों के विकसित किया है साथ ही निर्यात संवर्धन औद्योगिक पार्क (ई.पी.आई.पी.) और मजराकाढ़ में जेट्रो और राजस्थान सरकार की पहल से स्थापित

जापानी जोन विशेष उल्लेखनीय है। इन औद्योगिक क्षेत्रों में देश–विदेश की कई जानी मानी कंपनियों ने अपनी औद्योगिक इकाईयाँ लगाई है। और नये उद्योगो का आवागमन हो रहा है, जिससे एक और जहाँ राजस्थान की औद्योगिक प्रगति में नऐ आयाम जुड़ रहे है, वही प्रदेश में रोजगार के नए मार्ग भी खुल रहे है।

करीब 1200 एकड़ में फैले इस जापानी जोन के लगभग 70 प्रतिशत क्षेत्र में जापानी उद्यमियों की अपनी औद्योगिक इकाईयाँ लगाई जा चुकी है। हाल ही में 'निसान इण्डिया प्राईवेट लिमिटेड' ने यहाँ 240 करोड़ रूपये का निवेश कर अपनी इकाई लगाई है। इसके अलावा यहाँ डिस्किंग, मित्सुनिशी, डिकीकलर, टीकुकी, हॉवेल्स आदि उद्योग प्रमुखता के लिए हुए है। इन केन्द्रो के विकसित होने से मिराना में 21.5 अरब के निवेश के साथ ही तीन हजार से अधिक लोगों को रोजगार उपलब्ध हो सकेगा साथ ही, यहाँ आवास एवं अन्य योजनाओं तेजी से विकास होगा।

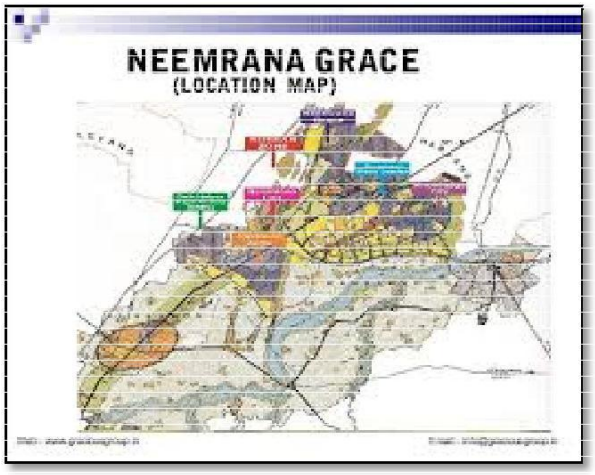

समस्या

जिले के बढ़ते हुए औद्योगिकरण से यहाँ पर कई प्रकार की समस्याओं की सामना करना पढ़ रहा है। जिले का सर्वाधिक पुराना औद्योगिक क्षेत्र उद्योग विभाग द्वारा विकसित किया जाकर रीको को हस्तान्तरित किया गया है। क्षेत्र में पर्याप्त सडक व नाले की व्यवस्था नही है तथा रोड लाईट का भी अभाव है। इस संदर्भ में नगर विकास, जिला परिषद रीको व सार्वजनिक निर्माण विभाग को निर्देशित किया गया है। आज अलवर जिले की औद्योगिक क्षेत्र की प्रासंगिकता भी विश्वस्तरीय औद्योगिक इकाईयों में सम्मिलित होते जा रहे है। यहाँ के वृहद, सूक्ष्म, व लघु औद्योगिक इकाईयाँ अपने विकास के चरमोत्कर्ष पर है।

आज अलवर में भिवाड़ी में देश का पहला कार्गो एयरपोर्ट बनाया जा रहा है। इस संम्बन्ध में उड्डयन मंत्रालय की निमराणा में एयरपोर्ट अजरका और कोटकासिम के बीच में बनाया जान तय किया गया है। जिनका मुख्य उद्देश्य दिल्ली और रेवाड़ी उद्यमियों को हो रही असुविधा को दूर करना है। साथ ही नीमराणा–शाँहजहापुर–भीवाड़ी और बहरोड़ में स्थापित उद्योग के उत्पाद को देश–विदेश में कार्गो परिवहन की सुविधा मिलती रहे। कोटकासिम आज रेवाड़ी, घासहेडा, भिवाड़ी, तिबारी, और अलवर से जुड़े होने के कारण आज यह विकास के शिखर पर है। रीको के माध्यम से अलवर जिले के निमराणा में पिछले कुछ वर्षो से विभिन्न चरणों में औद्योगिक क्षेत्र के साथ ही "निर्यात संवर्धन औद्योगिक पार्क" और राजस्थान सरकार की पहल से स्थापित जापानी जोन विशेष उल्लेखनीय है। इन औद्योगिक क्षेत्रों में देश–विदेश की जानी–मानी कम्पनियो ने अपनी इकाईयाँ लगाई है। जयपुर दिल्ली के बीच स्थित नीमराणा, दिल्ली से मात्र 122 km दूर है। NCR के साथ ही दिल्ली, मुम्बई इंडस्ट्रियल कॉरीडोर (डी०एम०आई०सी०) और दिल्ली–मुम्बई मालवाहक रेल गलियारा का हिस्सा होने के कारण नीमराणा का भविष्य काफी उज्जवल है। नीमराणा फेज–I और फेज–II के बाद अब 'गिलोट' में फेज–I, II में भी कई बडे उद्योग आ रहे है। नीमराणा में अन्य देश के उद्यमी भी बड़े पैमाने पर निवेश करने को आतुर दिखाई दे रहे है। हाल ही में 15 अफ्रीकी देशों के 25 सदस्य दल ने नीमराणा में 'ताइवानी जोन' की स्थापना की संभावनाएँ तलाश रहे है। इसका सबसे अधिक लाभ नीमराणा को मिलेगा।

राष्ट्रीय राजमार्ग–8 के अन्तर्गत दिल्ली जयपुर मार्ग को छः लेन में बदला जा रहा है और यहाँ इस मार्ग पर कई फ्लाईऑवर बन रहे है। जिससे नीमराणा की दिल्ली और जयपुर से दूरी कम हो जायेगी। छः लेन इस मार्ग के समानान्तरण एक सुपर एक्सप्रेस हाइवे के निर्माण की भी योजना है,जो नीमराणा से होकर गुजरेगा। जापानी उद्यमियों की तरह ही नीमराणा में अन्य देश के उद्यमी भी निवेश में दिलचस्पी लेते दिख रहे है।

इसी प्रकार 'निसान इंण्डिया प्राइवेट लिमिटेड' ने यहाँ पर 240 करोड़ रूपये का निवेश कर अपनी इकाई लगाई है। इनके अलावा 400 करोड़ रूपये के निवेश मित्सुई केमिकल प्राइवेट लिमिटेड, 160 करोड़ रूपये की लागत से यूनीमार्च हाईजेनिक प्राइवेट मिमिटेड 155 करोड रूपये के निवेश से ऑटोपार्ट्स की कंपनी यिकूनी इंण्डिया प्राइवेट लिमिटेड लगाई गई है। इस केद्र से नीमराणा को 21.5 अरब रूपये के निवेश के साथ ही 3,000 से अधिक लोगों को रोजगार उपलब्ध हो सकेगा साथ ही आवास एवं अन्य योजनाओं को तेजी से विकास होगा।

निष्कर्ष

यद्यपि अलवर के सतत् औद्योगिक विकास के साथ ही यहाँ पर प्रदूषण भी दिन प्रतिदिन बढता जा रहा है। अलवर जिले में 12 हजार छोटी बड़ी औद्योगिक इकाई है भिवाड़ी नीमराणा व अलवर औद्योगिक क्षेत्र में सेकड़ों ऐसी इकाई है, जो दूषित पानी के बिना ट्रीटमेन्ट छोड रही है। भिवाड़ी में ऐसी इकाईयों की संख्या ज्यादा है। सी० ए० जी० की रिपोर्ट ने राजस्थान प्रदूषण कंट्रोल बोर्ड के मुताबिक लघु और मध्यम अद्योगों की फैलाने में बड़ी भूमिका रही है।

सारांश शोधकर्ता द्वारा अलवर के उद्योगो के सतत् विकास को ध्यान में रखते हुये यहाँ के आर्थिक विकास को प्रस्तावित किया है। सतत् औद्योगिक विकास के साथ ही बढ़ते प्रदूषण पर भी नियन्त्रण के प्रयास किये जा रहे है वाकी अलवर जिले के सतत् औद्योगिक विकास विश्व–स्तर के औद्योगो में शामिल हो सके। आज अलवर

जिले का सतत् औद्योगिक विकास व आधारभूत संस्थाओं की अपनी प्रासंगिकता प्राकाष्टता के शिखर को छू रहे है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *जिला दर्शन (2015), उदीयमान राजस्थान सूचना एवं जनहसंपर्क कार्यालय, अलवर।*
2. *अलवर–हौसले की उड़ान (2010), सूचना एवं जनसंपर्क कार्यालय, अलवर।*
3. *रीको दा इंडस्ट्रीयल कैटालिस्ट, 2015।*
4. *आर्थिक समीक्षा 2016–16, राजस्थान सरकार, जयपुर।*
5. *औद्योगिक नीति (2010) राजस्थान सरकार, जयपुर।*